P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

भारतीय स्त्री की वर्तमान स्थिति

सारांश

स्त्री के कितने रूप, कितनी भूमिकाएँ समाज ने तय कीं, जिन्हें वह बिना शिकायत के सिर झुकाए बेआवाज निभाती रही है। लेकिन आज की स्त्री ने सिर उठाया है और दुनिया की आखों में आखें डालकर सवाल करने लगी है। अपने हक की मांग कर रही है। लेकिन अभी भी हमारे देश, समाज में बहुत सी ऐसी स्त्रियॉ है जो गुमनामी की जिन्दगी जी रही है उन्हें इतनी भी आजादी नहीं की वो अपनी भावनाओं को, अपनी समस्याओं को किसी से कह सके। ऐसी महिलाओं की संख्या ग्रामीण क्षेत्रो में ज्यादा है। आज हम सभी 21वीं सदी में प्रवेश कर गये है लेकिन विकास के मामलों में अभी भी दूरी बाकी है, और ये विकास तब तक संभव नहीं जब तक देश के स्त्री और पुरुष समान रूप से आगे नही बढ़ेगें।

आधी आबादी का जीवन स्तर ऊँचा करने के लिए सरकार न जानें कितनी योजनाएँ चला रही हैं। उन्हें सशक्त कर समाज की मुख्यधारा में आगे रखने की पुरजोर कोशिश कर रही है। वैज्ञानिक युग में महिलाएँ पारम्परिक दासता को तोड़कर वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास में अपनी सार्थकता स्थापित करने का प्रयास कर रही है एवं अस्मिता के प्रति धीरे–धीरे सतर्क होती जा रही है।

मुख्य शब्द : महिला, जागरूकता, 21वीं सदी, समाज, नारी, परिस्थिति, आत्मनिर्भरता, वैश्वीकरण, शोषण, समस्या, स्त्रियॉ।

प्रतिमा गुप्ता
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
गायन विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
फतेहपुर

प्रस्तावना

प्राचीन युग में नारी को विशेष श्रद्धा से देखा जाता है और जननी होने के कारण उसे समाज में सम्मान एवं महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। लेकिन जैसे जैसे सभ्यता का विकास होता गया समाज में नई सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाएँ लागू होती गयीं। स्त्रियों के सामाजिक सरोकार बदलते गये। इसी क्रम में एक समय ऐसा आया, जब लोगों की मानसिकता में अनेक परिवर्तन आये और वहीं स्त्री जो अपने समाज में कभी श्रद्धा की दृष्टि से देखी जाती थी, अब वह वस्तु के रूप में देखी जानी लगी है। सामंती और पूंजीवादी व्यवस्था ने स्त्रियों के व्यक्तिगत एवं सामाजिक अस्तित्व को नष्ट कर डाला।

ए0 आर0 देसाई ने लिखा है – ''वैदिक युग के शुरू के काल को छोड़ सभी युगों में नारी पुरुष की अधीनता में रहती आई है। समाज में पुरुष को कुछ ऐसे भी अधिकार थे, कुछ ऐसी स्वतन्त्रताएं थीं, जिनसे स्त्रियॉ वंचित थीं। स्त्री और पुरुष के निजी और सामाजिक आचरण की अच्छाई बुराई के मानदण्ड भिन्न थे।''

आधुनिक सभ्यता के आगमन और विकास के साथ–साथ स्त्री की पहचान भी बदलती गई है। कुलीन घरानों और आर्थिक रूप से सम्पन्न स्त्रियों का आस्तित्व तो बचा रहा, परन्तु निम्न वर्ग विशेषकर दलित वर्ग की स्त्रियों की स्थिति तो और भी बदत्तर होती गयी। वही दूसरी ओर अपनी जातिगत स्थिति के कारण वे दोहरे अत्याचार, शोषण और अपमान की शिकार बनीं।

भारतीय समाज में कुछ ऐसी भी स्त्रियॉ थीं, जिनके साथ समाज और परिवार दुश्मन जैसा व्यवहार करता था। ऐसी स्त्रियों में वे स्त्रियां थीं, जो विधवा होने के बाद सन्तान उत्पन्न नहीं कर सकती थी। लेकिन आज इस प्रथा में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है किन्तु भले ही विधवा पुर्नर्विवाह होने लगे हो, यदा कदा फिर भी ऐसी स्त्री दशा को देखा जा सकता हैं। ऐसी बहुत सी कहानियां हैं जो विधवाओं की सामाजिक एवं मानसिक स्थिति का गहराई से मूल्याकंन एवं चित्रण करती है। वर्तमान में भले ही विधवा के पुनर्विवाह की सामाजिक स्वीकृति है फिर भी ऐसी बहुत–सी स्त्रियाँ है जो विधवा होने का दंश निरन्तर झेल रही है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय स्त्री की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि – ''स्त्री पुरुष की सहचरी है। उसकी मानसिक शक्तियॉ पुरुष से जरा भी कम नहीं है उसे पुरुष के छोटे – छोटे कामों में हाथ बटाने का अधिकार है जितना पुरुष को अपने क्षेत्र में उसकी सर्वोच्चता उसी प्रकार स्वीकार की जानी चाहिए जिस प्रकार पुरुष की उसके क्षेत्र में। कुछ मामलों में तो स्त्री पुरुष की दासी नही, बल्कि बहुत सी बातों में पुरुष से श्रेष्ठ है।''

किन्तु आज स्थिति यह है कि देश की लगभग आधी आबादी अनेक समस्याओं से जूझ रही है। पुरुष प्रधान समाज में महिलाएॅ अपने अधिकारों के लिए सघर्ष कर रही है। उनका निम्न पालन पोषण सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, मौलिक स्वतन्त्रता पर रोक, कन्या भ्रूण हत्या, शारीरिक शोषण करना आदि का पुरूष मानसिकता के रूप में देखा जा सकता है।

विभिन्न धर्मों में महिलाओं के लिए कई प्रकार के नियम व कानून निर्धारित कर दिए गये है और इनका पालन करना आवश्यक होता है। इस व्यवस्था में महिला पुरुष के मध्य जो असमानता है उसे जन्म से लेकर मृत्यु तक देखा जा सकता है।

महिलाओं के साथ होने वाले इन सभी भेदभाव के लिए हमारे समाज में व्याप्त कई कारण जिम्मेदार है जैसे– जैविक कारण, मनोवैज्ञानिक कारण , धार्मिक कारण व आर्थिक कारण एवं पितृसत्तात्मक व्यवस्था आदि।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अर्थशास्त्र एवं सामाजिक मामलों के विभाग द्वारा जारी एक रिर्पोट के अनुसार विश्वभर के सभी समाजों में लड़कियों एवं महिलाओं को शारीरिक, यौन और मानसिक उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है, चाहे वे किसी भी वर्ग, संस्कृति अथवा आयवर्ग से सम्बन्धित हो।

टीवी चैनल महिलाओं के इस आधुनिक रूप को बढ़–चढ़कर दिखा रहे है। भूमंडलीकरण एक ऐसी चक्की है, जिसमें औरतों को पीसा जा रहा है। अगर भूमंडलीकरण का एक चेहरा बेबस गरीब औरत है, जिसकी आखों में उसके भूखें बच्चे के प्रति उसकी वेदना समाई हुई है। तो उसका दूसरा चेहरा उस लड़की का है, जिसका मुॅह गुस्से से तमतमाया हुआ है। भूमंडलीकरण के इस दौर में महिलाओं का छद्म रूप दिखाकर उन असंख्य महिलाओं की वेदना नहीं छिपाई जा सकती, जो हमारे गावों में रहती है। महिलाओं का वास्तविक सघर्ष गॅावों में देखने को मिलता है जहॉ वे अशिक्षा, बेरोजगारी एवं अस्तित्व के संकट से नितप्रति टकराती रहती है। उनके आसपास का समाज पुरातन रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है उससे उबरने की कशिश और झटपटाहट को बखूबी देखा जा सकता है, किन्तु यह सच्चाई है कि तमाम अनैच्छिक दंश झेलने को वे मजबूर है।

वैश्वीकरण ने महिलाओं को एक वस्तु बना डाला है और इस उपभोक्तावादी संस्कृति ने धड़ल्ले से महिलाओं का प्रयोग एक वस्तु के रूप में कर रही है। विशेषकर टेलीवजन एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया ने महिलाओं का ओवर एक्सपोज किया है। कोई भी फैशन शो या विज्ञापन महिलाओं के अभाव में सम्भव नहीं हैं।

भूमण्डलीकरण के इस दौर ने आधुनिक युवा महिलाओं को ग्लोबल सिटीजन बना दिया है, जो आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी एवं स्वालम्बी है, जिसने पुरुष प्रधान चुनौती पूर्ण क्षेत्रों में भी अपनी दक्षता का प्रमाण प्रस्तुत किया है। वह पायॅलट, पुलिस आफिसर, नेवी एवम् वैज्ञानिक आदि जैसे नवीन क्षेत्रों मे भी अपनी योग्यता सिद्ध कर रही है। वस्तुतः 21 वीं सदी महिला शती है। भारतीय राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल, श्रीमती सोनिया गांधी आदि जैसी सामाजिक, राजनितिक जीवन की ख्याति प्राप्त उगलियों पर गिनी जाने वाली महिलाएॅ है। किन्तु समाज में अधिसंख्य महिलाओं की स्थिति अभी भी बहुत बेहतर नहीं है। निकट भविष्य में इन्हें अपने व्यक्तित्व को और अधिक संघर्षशील बनाने की आवश्यकता पड़ेगीं, जिससे ये अपने अस्तित्व को स्थापित कर सके।

बचपन से लड़कियों को शिक्षा दी जाती है कि तुम्हें दूसरे के घर जाना है। अतः सारी नैतिकता, संस्कार, रसोई बनाने, घर संभालने का दायित्व उसी का है। शादी के बाजार में नौकरीपेशा लड़कियों की मांग ज्यादा है, हॉलाकि नौकरीपेशा लड़कियों को घर और बाहर दोनों की जिम्मेदारी सम्भालनी पड़ती है। जो बहुत ही समस्याओं भरा होता है। पग–पग पर वह तिरस्कृत, असुरक्षित और उत्पीड़ित होती है। कोई भी ऐसी महिला नही होगी जो जीवन में कभी न कभी उत्पीड़न, शोषण,या हिसां का शिकार न हुई हो। समाज की बहुसख्ंयक महिलाएॅ मूलभूत मानवाधिकारों से वंचित हैं, निरक्षर है, शोषित और पिड़ित हैं। आज भी महिलाओं की भूमिका प्रमुखतः पत्नी, माता और पति की अनुगामीनी के रूप में ही है, चाहे उसकी शिक्षा और कैरियर का स्वरूप कुछ भी क्यों न हो, महिला के चिन्तन का केन्द्र बिन्दु पति और परिवार ही है।

दुनिया का ऐसा कोई भी देश नहीं है, जहॉ महिलाओं को हाशिए पर रखकर आर्थिक विकास सम्भव हुआ है। महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़े बिना किसी समाज राज्य एवं देश के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इन परिस्थितियों के बावजूद महिलाएॅ अपनी योग्यताएॅ सिद्ध कर रही है और समाज,देश में अपना मुकाम हासिल कर रही है। वैश्वीकरण ने महिलाओं की स्थिति को भी प्रभावित किया है। जीवन के हर क्षेत्र में महिलाएॅ अपनी योग्यता, क्षमता के बल पर झड़े गाड़ रही हैं। देश के विकास में उनकी भागिदारी ने उन्हें अबला, कमजोर से सबला और समर्थ सिद्ध कर दिया है। आज की रोल माडल इंदिरा नूयी, हिलेरी क्लिटंन किरण बेदी आदि जैसी महिलाएॅ है।

आज अनवरत संघर्ष के बूते देश में महिलाओं ने सत्ता के सर्वोच्च शिखर तक चढ़कर हर क्षेत्र में स्वयं को पुरुषों के समकक्ष साबित किया है। जहॉ शहरों में महिलाएॅ बुद्धि के हर क्षेत्र में स्वयं को सिद्ध किया है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी महिलाओं में साक्षरता बढ़ी है और वे स्वरोजगार के जरिए आत्मनिर्भर की ओर अपने कदम बढ़ा रहीं है। वे गावों में पंचायत स्तर पर भी नेतृत्व प्रदान कर रही है। महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुधरी है। वे नए

जोश के साथ रसोईघर की दहलीज़ लाघकर सामाजिक, दायित्व निभाती दिखाई पड़ रही है। अपने स्वप्नों को साकार करने के लिए महिलाओं ने गरीबी और सामाजिक बन्धनों को तोड़ा है ये सुधार जाहिर तौर पर महिलाओं में नई चेतना का प्रतीक है। अभी भी लाखों करोडों ऐसी महिलाएँ अपने है जो अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत है, इनमें ग्रामीण महिलाओं की संख्या ज्यादा है।

एक तरफ महिलाएँ सीढ़ी दर सीढ़ी प्रगति की ओर कदम बढ़ा रही है तो दूसरी ओर आज भी कन्याभ्रूण हत्या, यौन हिसां, दहेज उत्पीड़न जैसी सामाजिक बुराइया हमारे समाज में बड़े पैमाने में विद्यमान है। इनमें कुछ कमी आई है। यहीं नहीं महिलाओं में जागरूकता आई है, वे इन रूढ़ियों से लड़ना चाहती हैं, वे पढ़ना और आत्मनिर्भर बनना चाहती है। उनमें कुछ कर दिखाने का जज्बा भी है और साहस भी।

अध्ययन का उद्देश्य

आज भी मैं अपने आस पास देखती हूॅं कि बहुत सी स्त्रियॅा अपने परिवार या समाज में बराबरी का हक नही पाती या तो वे अपनें अधिकारों के बारें में नही जानती या उन्हें अपने अधिकारों का प्रयोग नही करने दिया जाता जिससे वे दूसरों पर आश्रित रहती है वह व्यक्ति जैसा कहता है वे उसे सही मान लेती हैं। उनमें शिक्षा, जागरूकता और आत्म विश्वास की कमी रहती है। कुछ स्त्रियॅा या लड़कियॅा ऐसी भी है जो शिक्षित तो है पर जागरूकता और आत्मविश्वास न होने के कारण शोषण का शिकार बनती है। उन्हें शिक्षा केवल इसलिए दी जाती है कि उनका विवाह हो सके न कि उनमें जागरूकता और आत्मविश्वास आये। किसी भी देश का विकास केवल कानून बना देने से नही हो सकता जब तक कि कानून का पालन सही ढ़ंग से न किया जाए। इस शोधपत्र को लिखने का उद्देश्य यही है कि उनमें जागरूकता आये और आधी देश का विकास सम्भव हो सके।

निष्कर्ष

एक महिला होने के कारण महिलाओं की पीड़ा को स्वयं में महसूस करती हूॅं और इस पीड़ा ने ही मुझे प्रेरित किया की यह शोध पत्र लिखूॅं। आज हम जिस औरत को तरक्की की सीढ़ियॅा चढ़ते हुए, आगे बढ़ते हुए सफलता के मुकाम तय करते हुए देख रहे हैं उसके पीछे उसकी अपनी पहचान के लिए संघर्ष, अधिकारों के लिए अपने परिवार, समाज से सतत् लड़ाई की बड़ी भूमिका रहती है। 21वीं सदी का पहला वर्ष महिला सशक्तीकरण को समर्पित किया गया। इसके बावजूद आज भी स्त्री पढ़ी लिखी हो या अनपढ़ उसे आज भी अपने अधिकारों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है, अपनी स्वेच्छा से कही भी आने जाने की स्वतन्त्रता नहीं है क्योंकि समाज महिलाओं के लिए अभी भी सुरक्षित नही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *समाज विज्ञान शोध पत्रिका अप्रैल– सित0 2014 पेज न0 110, ।*
2. *अनुशीलन पेज न0 238, 241, 309।*
3. *शोध दृष्टि पेज न0 99, 100।*
4. *वनिता मार्च 2018 पेज न0 16।*
5. *दैनिक जागरण 14 मार्च 2018*